जितेन्द्र श्रीवास्तव
की प्रतिनिधि कविताएँ
एक मूल्यांकन

संपादक

डॉ. चैनसिंह मीना

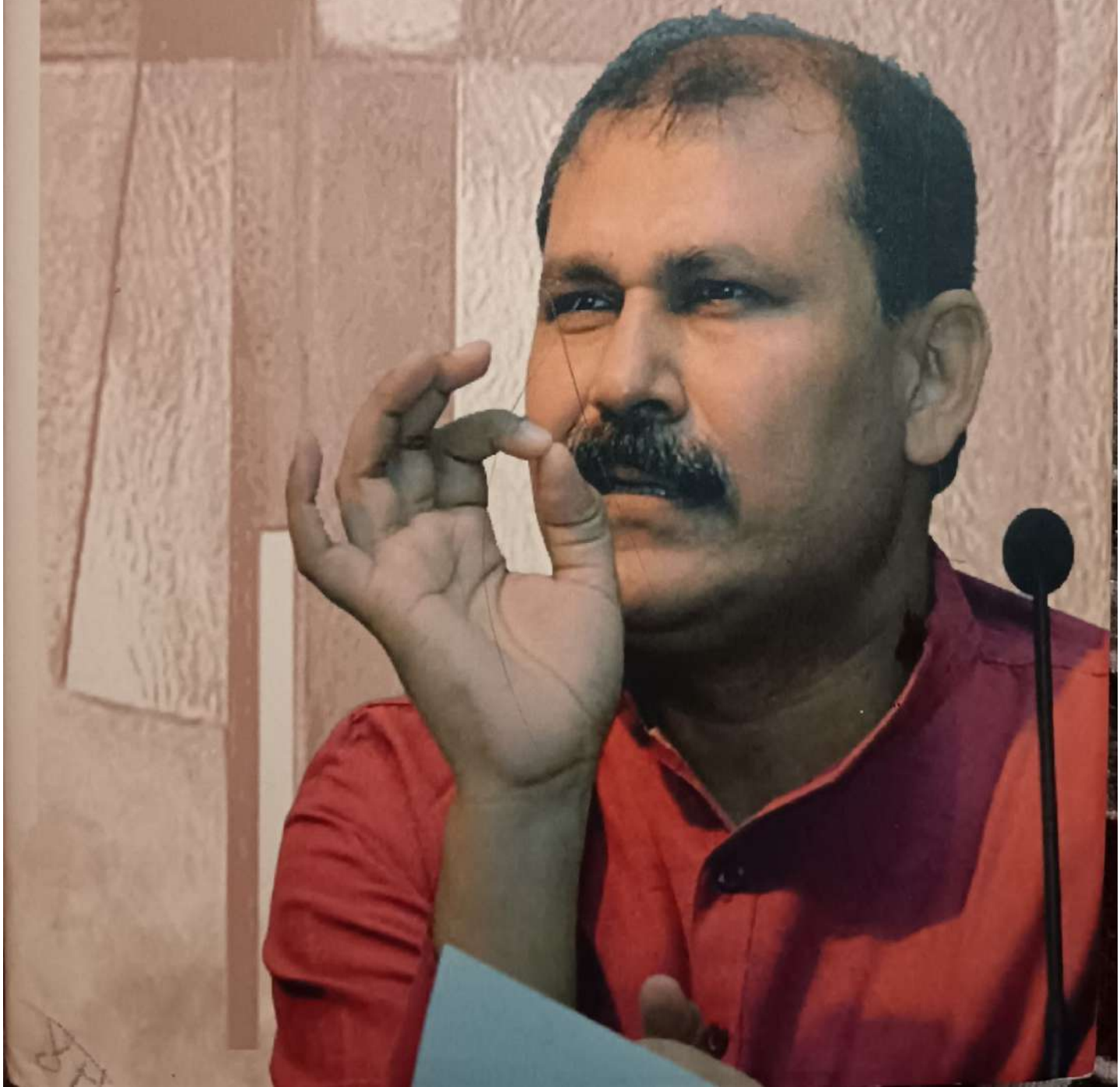

लेखक व प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक को पूरी तरह या आंशिक तौर पर या पुस्तक के किसी अंश की फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा इलेक्ट्रॉनिक अथवा ज्ञान के किसी भी माध्यम से संग्रह या पुनः प्रयोग की किसी भी प्रणाली द्वारा इस पुस्तक का कोई भी अंश प्रेषित, प्रस्तुत या पुनरुत्पादित न किया जाए। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के अपने विचार हैं, जिनसे प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

क़लमकार पब्लिशर्स प्रा.लि.

217, भारत अपार्टमेंट, सेक्टर 16-बी, द्वारका,
नई दिल्ली-110078
मो. 9310562856
ई-मेल: kalamkaarpublishers@gmail.com

आई.एस.बी.एन.: 978-93-92928-28-4

प्रथम संस्करण : 2022

© : डॉ. चैनसिंह मीना

मूल्य : ₹ 600.00

शब्दांकन : इज़मत ग्राफिक्स, गाजियाबाद, उ.प्र.
ई-मेल : izmatgraphics@ gmail.com, मो. 9911223542

मुद्रक : राधा ऑफसेट, नई दिल्ली-110002

भारत में प्रकाशित : क़लमकार पब्लिशर्स प्रा.लि., 217, भारत अपार्टमेंट, सेक्टर 16-बी, द्वारका, नई दिल्ली-110078 के लिए प्रकाशित।

Jitendra Srivastava Ki Pratinidhi Kavitayen
(Ek Mulyankan)
Edited by Dr. Chain Singh Meena

11 नयी सदी के योद्धाओं की सार्वभौमिक उपादेयता
(संदर्भ 'वे योद्धा है नयी सदी के')
-*शिवदत्ता वावळकर* : 62
12 कशमेकशे हयात में हुस्न का मेराज : 'किरायेदार की तरह'
-*कृपा किंजलकम्* : 72
13 'नमक हराम' : स्त्री की आत्मा पर पड़े अदृश्य निशानों का बयान
-*तरुण* : 79
14 'रूमाल की तरह' : स्मृतियों के बहाने अतीत से वर्तमान की यात्रा
-अमरेन्द्र पाण्डेय : 85
15 देह के प्रायोजित उत्सवों को नकारती सबला की दास्तां :
'एक नई स्त्री का आत्मकथ्य'
-शहाबुद्दीन : 90
16 एक अनकही कहानी : 'राय प्रवीन'
-सुलोचना दास : 94
17 जनचेतना के कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव
('साहब लोग रेनकोट ढूँढ रहे हैं' कविता के संदर्भ में)
-कार्तिक चौधरी : 101
18 मनुष्यता के कायांतरण का प्रतिपक्ष
(संदर्भ : 'कायांतरण' कविता)
-शम्भुनाथ मिश्र : 107
19 'बिल्कुल तुम्हारी तरह' : कुछ बातें
-भावना सरोहा : 113
20 गाँव का दक्खिन हो गया है 'आख़िरी आदमी'
(लोकतंत्र से बेदखल हुए अंतिम आदमी की त्रासदी)
-गंगाधर चाटे : 116
21 'रामदुलारी' : निम्नवर्गीय स्त्री की सामाजिकी
-भावना मासीवाल : 121
22 'सूरज को अँगूठा' कविता के होने का अर्थ
-अरविन्द कुमार यादव : 129
23 'पत्नी पूछती है कुछ वैसा ही प्रश्न जो कभी पूछा था
माँ ने पिता से' : एक विश्लेषण
-विनीता सिंह : 134
24 जीवन दर्शन को स्थापित करती कविता 'नए कबीर की प्रतीक्षा'
-शेरसिंह मीणा : 139

एक अनकही कहानी : 'राय प्रवीन'

-सुलोचना दास

कविता भावों की रागात्मक शृंखला है। वह जाने-अनजाने अनगिणत कड़ियों को जोड़ने का कार्य करती है। कविता में जीवन का जीवद्रव्य- प्रेम अन्तर्निहित रहता है। यही कारण है कि कवि-मन पत्थरों में भी निहित स्नेहिल-प्रेम-स्पर्श को सहज ही महसूस कर लेता है। राय प्रवीन ओरछा के पत्थरों में बसी एक ऐसी अनोखी दास्तान है, जो न तो इतिहास के पन्नों में दर्ज़ हुई और न किसी प्रेम-ग्रंथ में छपी। वह रह गई तो बस ओरछा की स्मृतियों में। और इन्हीं स्मृतियों से राय प्रवीन को काव्य-धरातल पर उतार लाने का कार्य करते हैं जितेन्द्र श्रीवास्तव।

जितेन्द्र श्रीवास्तव अपने कवि-कर्म के द्वारा समकालीन हिंदी कविता को एक नया आयाम और एक नया परिप्रेक्ष्य देते हैं। आज जहाँ चतुर्दिक विमर्शों की अनुगूँज आप्लावित है और कविता का परिदृश्य भी जिससे अप्रभावित नहीं है, वहीं जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताई विमर्शों के गलियारे से बाहर निकलकर एक नया मानदंड रचती हैं। कवि के लिए भावों की रागात्मिकता महत्त्वपूर्ण है, न कि विमर्शों के पैमाने। इसलिए वह बार-बार स्मृतियों में लौटता है। उसे पुनराविष्कृत करता है। सच कहा जाए तो स्मृतियाँ कवि का उपजीव्य हैं। स्मृतियों में आवाजाही करना कवि की अपनी एक विशेष प्रवृति और प्रविधि है। इसी प्रविधि में एक दिन ओरछा के 'राय प्रवीन महल' में भ्रमण करते हुए कवि की आत्मा राय प्रवीन से मिलने के लिए आतुर हो उठती है।

'राय प्रवीन' कविता महज़ एक कविता नहीं है, बल्कि कवि की अंतस-चेतना में निहित इतिहासबोध, स्त्री-संवेदना और प्रेम की सहज, सरल और विरल अभिव्यक्ति है। भारत के मध्यकालीन इतिहास की एक अनोखी और

★ *डॉ. सुलोचना दास, सह आचार्या & विभागाध्यक्षा, हिंदी विभाग, परिमल मित्र स्मृति महाविद्यालय, मालबाज़ार, जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल, मो. 9749391715*